Indian J. Soc. & Pol. 05(I):2018:67-70 Special Issue **ISSN : 2348-0084(PRINT)**
UGC List No. 47956 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

युगपुरुष पं. मदन मोहन मालवीय जी के राजनीतिक विचार

ऊषा देवी वर्मा[1a]
[a]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, वी एम एल जी कॉलेज गाजियाबाद,उ0प्र0,भारत

ABSTRACT

बहुआयामी प्रतिभा के धनी महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी युगपुरूष एवं अमर विभूति थे। वे महान देशभक्त एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के अग्रणी नेता, राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के अविस्मरणीय सूत्रधार, सामाजिक समरसता एवं स्वदेशी अर्थनीति के प्रबल समर्थक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक चेतना के युगद्रष्टा, दूरदर्शी, शिक्षाविद् एवं अद्भुद वाग्मिता के धनी तथा विलक्षण पत्रकार एवं संवेदनशील सत्यानुरागी थे। उनके जीवन दर्शन का मूल आधार ईश्वर भक्ति एवं राष्ट्रप्रेम था। उन्होंने दोनों में ऐसा सामजस्य स्थापित किया था कि दोनों भावनाएं एक दूसरे की पूरक एवं प्रेरणास्रोत बनी। वे राष्ट्र के सर्वांगीण अभ्युदय की कामना लेकर राजनीति में पदार्पण किये तथा जनता को राष्ट्र का प्रकट रूप मानते हुए अपने को उस जनता का मात्र एक सेवक माना, जनता ही उनकी भक्ति का चरम साध्य थी। मालवीय जी अपनी सांस्कृतिक अनुरक्ति,व्यापक जन सहानुभूति तथा निर्भीकता और निःस्वार्थतता से पूर्ण एक कार्यकर्ता के रूप में लोकप्रिय हुए। उनके आकर्षक व्यवहार और सौम्य व्यक्तित्व की वजह से उनके विरोधियों ने भी हमेशा उनका सम्मान किया। यूरोपीय प्रतिपक्षी भी यह जानते थे कि वे एक निष्पक्ष योद्धा है, इसी वजह से उनका आदर करते थे। एक नेक और प्यारा व्यक्तित्व, एक सच्चे कर्मनिष्ठ के रूप में जो कुछ भी सोचते और करते थे वह सभी देशवासियों के हित के लिए ही होता था।

KEYWORDS: *पं0 मदन मोहन मालवीय, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, राष्ट्रीय, एकता*

पं.मालवीय जी जिस समय राजनीति में पदार्पण किए,उस समय यह देश पराधीनता के साथ–साथ निर्धन एवं काफी दरिद्र भी था। वे देश को निर्धनता से नही दरिद्रता से मुक्त कराना चाहते थे। निर्धनता तो अर्थाभाव मात्र को सूचित करती है किन्तु दरिद्रता एक ऐसी स्थिति है, जो मनुष्य को नैतिक दृष्टि से खोखलाकर देती है मानवीय मूल्यों को नष्ट करके उसके जीवन को विकृत एवं विप्रद बना देती है,उसमें स्वदेशाभिमान, **आत्मगौरव ,आशा, उत्साह, एकता आदि राष्ट्रीय** प्रवृत्तियॉ समाप्त हो जाती है। दरिद्रता कृपणता, अज्ञानता और अन्य तमाम अनैतिक कर्मो को उत्पन्न करती है। दरिद्रता से मुक्ति के लिए पं. मालवीय जी ने नेता और नागरिकों में आत्मनियंत्रण, स्वदेशाभिमान तथा पौरूष का होना आवश्यक बताया, जो धार्मिक एवं शैक्षिक क्रान्ति के बिना संभव नही है। उन्होंने अतीत भारत की उज्ज्वल संस्कृति के साथ आधुनिक योरोपीय विज्ञान को जोड़ने का प्रथम प्रयास किया। धर्म, समाज,संस्कृति और शिक्षा को वे जीवन का आधार मानते थे। वे समझते थे कि इनके उत्थान के बिना राष्ट्र का उत्थान असंभव और अर्थहीन है। उनकी यह मौलिक दृष्टि उन्हें एक युगद्रष्टा पुरूष के रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है।

पण्डित मालवीय जी के राजनीतिक कार्यों का पहला मंच भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस थी, जिसके जन्म से लेकर अपने जीवन के उत्तरार्द्ध तक वे इसके सक्रिय एवं वरिष्ठ कार्यकर्ता रहे।(तिवारी,1988 पृ017) कांग्रेस के मंच से मालवीय जी ने राष्ट्र के हितों को पुष्ट किया, सरकार की दमननीति का विरोध करते हुए राजनीतिक सुधारों की मॉग की। मृदुभाषी मालवीय जी के भाषणों की भाषा सदा संतुलित होती थी। उनकी आलोचना स्पष्ट,युक्तिसंगत और कभी–कभी कड़ी होती थी। शुरू से लेकर अपने जीवन के अन्तिम दिनों तक कांग्रेस के प्रायः सभी वार्षिक अधिवेशनों में भाग लेकर पं. मालवीय जी ने राष्ट्र की विभिन्न समस्याओं पर अपने प्रौढ़ विचारों एवं जुझारू व्यक्तित्व का परिचय दिया। वे देश को राजनीतिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक दासता से मुक्ति कराने के लिए सदैव संघर्ष करते रहे। समय– समय पर कांग्रेस के अध्यक्ष भी चुने गये। साथ ही साथ उन्होंने प्रान्तीय कौंसिल (1903–1912) भारतीय विधान कौंसिल (1910–1920) और भारतीय लेजिस्लेटिव असेम्बली (1924–1930) के निर्वाचित सदस्य की हैसियत से देश के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये। महामना की जन्मशताब्दी अवसर पर बोलते हुए पं0 जवाहर लाल नेहरू ने कहा था भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जब से शुरू हुई,वह हमारी राजनीतिक आन्दोलन की खास निशानी रही है। उसे शुरू करने में, बनाने और बढ़ाने में मालवीय जी का महत्वपूर्ण योग रहा है। इसमें कोई शक नही कि समय की हवा देखकर भारतीय राजनीति में मालवीय जी अगुवा भी रहे और एक कड़ी भी रहे।(पाठक,2013 पृ06) महामना मालवीय जी राजनीति के शीर्ष पुरूष होते हुए भी किसी दल या गुट से कभी मतभेद नही था। यही कारण था कि वे एक समन्वयवादी एवं निष्पक्ष समझौतावादी थे। जब कभी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में कोई विवाद होता तो उसे सुलझाने और मेल कराने में अग्रणी सिद्ध हुए। श्रीपट्टाभिसीता रमैया ने लिखा है 'देश की राजनीति में मालवीय जी एक ऐसे व्यक्ति थे जिसमें इतना साहस है कि जिस बात को वह ठीक समझते थे,उसमें चाहे कोई उनका साथ दे या न दे उसको कर के ही दम लेते थे। अपनी आन्तरिक प्रेरणा के प्रति इस तरह की असाधारण निष्ठा का उदाहरण विरले महापुरूष ही दे सकते है।(तिवारी,1988 पृ022) पं. जवाहर लाल नेहरू ने कहा कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पुराने नेताओं में जिसमें बहुत ही बड़ों में पूज्य

1: Corresponding Author

मालवीय जी थे, दुनिया के किसी भी गज से नापे बड़ा ही पायेगें। 19वी शदी में जब भारत की अन्तरात्मा नई करवट ले रही थी, उसका राष्ट्रीय सांस्कृतिक विवेक निर्मित हो रहा था उस निर्माण में राममोहन राय, केशवचन्द्रसेन, विवेकानन्द, ज्योतिबाफूले, दादाभाई नौरोजी, सर सैयद अहमद खॉ,मौलाना अबुल कलाम और महात्मा गांधी एवं मालवीय जी आदि की भूमिका अपने–अपने ढंग से औपनिवेशिक दमन और बहुपर्तदार सामाजिक क्रान्ति के प्रयासों को व्यापक बनाने की थी। नवजागरण के अग्रदूतों का चिन्तन,बहुधार्मिक, बहुभाषिक और बहुजातीय देश एवं औपनिवेशिक वातावरण में भी राजनीतिक जागरूकता के लिए संघर्षरत था तथा बुद्धिवाद, समाजसुधार और आधुनिक संस्कृति के निर्माण के लिए प्रयासरत भी था। रोमैरोलां के शब्दों में मदन मोहन मालवीय ''गांधी जी के बाद भारत के सम्मानित व्यक्तियों में एक है। वह ऐसे महान राष्ट्रीयतावादी है, जो प्राचीनतम हिन्दू विश्वासों और आधुनिकतम वैज्ञानिक विचारों में समन्वय कर सकते है।(पाठक,2013 पृ04)

मालवीय जी देशवासियों में सत्य और ज्ञान की शक्ति से युक्ति एक ऐसी राष्ट्रीय भावना का विकास करना चाहते थे जिसमें देश का सर्वागीण विकास हो सके। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। उसमें उनकी परिकल्पना ऐसे विद्यार्थियों को शिक्षित करके देश के लिए तैयार करने की थी जो देश का मस्तक गौरव से ऊॅचा कर सकें। विश्वविद्यालय की स्थापना के पीछे दूसरा लक्ष्य भारत की सनातन सहिष्णु संस्कृति, नैतिकता,धार्मिक मर्यादाओं, जीवन के मौलिक अनुशासन,कार्य के प्रति निष्ठा, दान भिक्षा जैसे विराट भाव,विश्व भाईचारा,सभी को सुखी,सभी को निरामय रखने का उद्देश्य निहित है। देशव्यापी बौद्धिक एवं सांस्कृतिक नवजागरण के प्रेरक इस विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के समय से ही देशवासियों को स्वदेशाभिमान और स्वदेशप्रेम का जो संदेश दिया,वह अन्ततः गुलामी से मुक्ति का एक महान बीजमंत्र बना। यह विश्वविद्यालय भारतीय संस्कृति के प्रति एक आधुनिकतम दृढ़ कदम है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने अभी 101 वर्ष पूरे किये। इन 101 वर्षो के दौरान इस विश्वविद्यालय ने राष्ट्र निर्माण की दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। महामना ने जिन उद्देश्यों के लिए इस विश्वविद्यालय की स्थापना की उन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विश्वविद्यालय सदैव प्रयासरत रहा है। चाहे राजनीतिक नेतृत्व प्रदान करने की बात हो या देश के विकास में अपना योगदान देने की बात, हर दिशा में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय हमेशा से आगे रहा है। आज न जाने कितने साहित्यकार, दार्शनिक इतिहासकार, समाजशास्त्री, वैज्ञानिक प्रबन्धशास्त्री, विधिशास्त्री है जिन्होंने अपने –अपने क्षेत्र में अपनी महती भूमिका अदा की है।

स्वामी विवेकानन्द तथा अरविन्द की भॉति मालवीय जी को भी हिन्दू संस्कृति की श्रेष्ठता में विश्वास था। वे राष्ट्रवाद की किसी ऐसी धारणा को स्वीकार करने के लिए तैयार नही थे जो हिन्दू धर्म के आधारभूत नैतिक सिद्धान्तों के प्रतिकूल हो। किन्तु मालवीय जी का हृदय विशाल एवं उदार था, अली बन्धुओं (मो0 अली और शौकत अली) तक ने उनकी राजनीतिक कार्यप्रणाली की उदारता को स्वीकार किया था। वे इस पक्ष में नही थे कि देश में हिन्दुओं का आधिपत्य हो। उनकी दृष्टि में सच्चे भारतीय राष्ट्रवाद की आवश्यकता यह थी कि जनता के सभी वर्गो का कल्याण और उनके हितों का संबर्द्धन किया जाए। राष्ट्रीयता उस भाव का नाम है जो देश के संपूर्ण निवासियों के हृदय में देश हित की लालसा से व्याप्त हो, जिसके आगे अन्य भावों की श्रेणी नीची रहती हो। जब देश में इसी भाव के बहुत से लोग उत्पन्न हो जाते है तब वे सब लोग मिलकर चाहे अलग– अलग रास्तों पर चले, परन्तु उनका एक ही उद्देश्य रहता है देश की सेवा करना। अपने सच्चे प्रयत्नों से अपने आप को अगुआ मानते हुए,आपत्तियॉ झेलते हुए,अनुचित दबाव से न दबते हुए,देशभर के संपूर्ण बाल– वृद्ध, स्त्री–पुरूष , नागरिक और ग्रामीणों के हृदय में सच्ची देशभक्ति को उत्पन्न कर देते है। थोड़े ही दिनों में देश ही समस्त देशवासियों का प्रेम और भक्ति का विषय हो जाता है और मतभेद, वर्णभेद और जातिभेद के होते हुए भी राष्ट्रीयता का श्रेष्ठ भाव देश व्यापी हो जाता है और इतना बढ जाता है कि उसके आगे अन्य भावों का दर्जा नीचा दिखने लगता है। जापान राष्ट्रीयता की इस श्रेणी में उच्च स्थान पर पहुॅच गया है। जापानियों में बौद्ध, ईसाई और अन्य मतावलम्बी भी है, परन्तु यदि किसी से पूछा जाय कि तुम कौन हो तो वह अपने को बौद्ध,ईसाई अन्य मतावलम्बी नही बतलायेगा, बल्कि यही कहेगाा कि मै जापानी हूॅ, मेरा धर्म जापान है,मेरा कर्म जापान है। जिस देश में ऐसी देशभक्ति होती है वहॉ किसी प्रकार का भेदभाव नही होता है। गाढ़ देशभक्ति से एकता उत्पन्न होती है, एकता से राष्ट्रीयता का भाव और राष्ट्रीयता के भाव से देश की उन्नति होती है।(मालवीय,1962 पृ099–100) मालवीय जी कहा करते थे कि 'सब संप्रदाय के लोगों को एक महान राष्ट्र के रूप में संयुक्त करने के लिए आवश्यक है कि सभी व्यक्तियों में देशभक्ति तथा भाईचारे की भावनाओं का विकास किया जाए। मालवीय जी हिन्दुत्व के समर्थक तो थे,किन्तु हिन्दू राष्ट्र के पक्षधर नही थे। हिन्दूओं से उनकी अपील थी कि 'वे पहले भारतवासी है,तब हिन्दू'उन्होंने अपने एक भाषण में कहा है कि ''भारतवर्ष केवल हिन्दुओं का देश नही, यह मुसलमानों ईसाइयों और पारसियों का भी देश है। यह देश तभी समुन्नत होगा,जब भारतवर्ष की विभिन्न जातियॉ और यहॉ के विभिन्न धर्मो के लोग सद्भावना और एकात्मकता के साथ रहे तथा एक स्वशासित संयुक्त राष्ट्र का निर्माण करें।(लाल,1978 पृ0548)

जीवन के प्रति मालवीय जी का दृष्टिकोण धार्मिक था। उन्हें धर्म की जीवनदायिनी शक्तियों में हार्दिक विश्वास था। उनका मानना था कि धार्मिक नियमों, व्रतों का पालन करने से जो नैतिक प्रगति होती है वह भौतिक समृद्धि से अधिक सारयुक्त हैं। वे कर्तव्यपरायणता, भक्ति तथा समर्पण की धार्मिक भावनाओं को राष्ट्रीय महानता का साधन मानते थे। नैतिक मूल्यों की पवित्रता तथा आवश्यकता को उन्होंने गम्भीरता से हृदयगम कर लिया था। गांधी जी महामना के देशभक्ति की प्रशंसा में कहा है देशसेवा ही मालवीय जी का भोजन है, वे इसे कभी नही छोड़ सकते, जिस तरह 'भगवद्गीता' का नित्य पाठ छोड़ना उनके लिए असंभव है,उसी तरह

देशसेवा भी उनके जीवन की सॉस की तरह है। इसीलिए जब तक उनके शरीर में सॉस है, तब तक देशसेवा होती रहेगी, और कौन जानता है कि वे इसे अपने साथ स्वर्ग में ले जाये, किन्तु दिक्कत यह है कि मालवीय जी स्वर्ग में जाना ही नही चाहते थे। उनकी अभिलाषा है ''मुझे न तो राज्य की कामना है, न स्वर्ग की और न ही मोक्ष की। मेरी बस एक ही कामना है, पुनः जन्म लेकर दुःख से त्रस्त जनता के दुःख दूर करूँ,अँधेरी ऑखें को रोशनी दूँ।''(तिवारी,1988 पृ032) इन दोनों महापुरूषों के व्यक्तित्व एवं दृष्टि के संबंध में कुछ तत्कालीन विद्धानों एवं महापुरूषों का कहना था की लन्दन की गोलमेज कॉन्फ्रेंस में यदि महात्मा गांधी कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित हुए थे, तो महामना मालवीय जी आध्यात्मिक भारत के धर्म सदाचार, संस्कृति, सभ्यता तथा मानवता के प्रतिमूर्ति के रूप में उपस्थित हुए। जिन्होंने जीवनभर समुद्र यात्रा को पाप समझा हो और जिसका धार्मिक हृदय समुद्र यात्रा की कल्पना भी न कर सकता हो उसने अपने देश के लिए यह यात्रा स्वीकार करके अपनी सबसे प्यारी वस्तु धर्म को भी देश के लिए अर्पण कर दी। यह उनका सबसे बड़ा त्याग था। मालवीय जी के लिए विलायत जाना दधीचि और शिवि के त्याग से कम न था।(चतुर्वेदी,2001 पृ0154) वे एक आदर्श राजनीतिज्ञ थे और धर्महीन राजनीति को पापों का गर्त मानते थे उनका धर्म संकुचित और मजहब – परस्त नही, बल्कि व्यापक मानवता और विश्बन्धुत्व का आधार था।

28 दिसम्बर सन् 1936 ई0 को फैजपुर में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ मालवीय जी जो पचास वर्ष पहले कांग्रेस के जन्मदाताओं के साथ दिखाई दिये, वही अब कांग्रेस के पुत्रों के साथ खड़े दिखाई दिये। वेष और तेज में बिल्कुल वैसे ही,केवल बुढ़ापा उनके सफेद बालों में दिखाई दे रहा था। फैजपुर कांग्रेस में जो उनका जोशीला व्याख्यान हुआ वह वैसा ही था जैसा पचास वर्ष पहले, पर उनका भाव बहुत कुछ बदला हुआ था। पूरे पचास वर्ष हो गये, जिस वीर योद्धा ने अपनी जवानी में देश की सेवा करने का प्रण लिया, वह आज भी उसी तरह से बल्कि उससे भी दुगने जोश में दिखाई दे रहा है। मुँह पर जरा भी कमजोरी नहीं दिखाई पड़ती। न जाने कितने पुराने साथी खेत, कितने मैदान छोड़कर भाग गये, कितनों का बुढ़ापे ने वेबस कर दिया। अगर कोई एक बहादुर ऐसा है, जो शुरू से आखिर तक पितृ–भक्त पुत्र के समान सारे राष्ट्र की प्रसन्नता और अप्रसन्नता में अपना सुख और अपना घर त्याग कर निरन्तर मन,वचन और कर्म से राष्ट्र की सेवा कर रहा हो, जिसके प्रत्येक कार्य में भारत का कल्याण छिपा हो, जो प्रत्येक प्रार्थना भारत की हित कामना के लिए करता हो, जिसके उपदेशों में देश सेवा का राग भरा हो–वह मालवीय जी है। लोगों को महापुरूषों की तुलना करने में आनन्द आता है,पर वे अतुलनीय हैं।(वही पृ0163–167) महात्मा गांधी और मालवीय जी ये दोनों विभूतियॉ एक साथ भारत के कल्याण करने के लिए आई। दोनों ही शक्तियों ने मिलकर जो काम किया, उसको इतने थोड़े पन्नों में कोई कहॉ तक वर्णन कर सकेगा। स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने संस्मरण में लिखा है ''दलबन्दी का नेता बनने की इच्छा से वे (मालवीय जी) कोसों दूर थे। वे जो कुछ भी करते, उसमें देशभक्ति और सेवाभाव सर्वोपरि रहता था''(तिवारी,1988पृ053) उनका यह स्वभाव था कि जब राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय विचारों को धक्का लग रहा हो, तब वह उसको बर्दास्त नही कर सकते थे। अपनी प्रशंसा सुनना पसन्द नही था और अपने किसी मित्र या शत्रु की शिकायत सुनना तो उनके लिए और भी कष्टकर था। 1910 ई0 में गोखले ने प्रेस विधेयक का समर्थन तथा मालवीय जी ने विरोध किया था। इस पर अखबारों ने मालवीय जी की बहुत प्रशंसा तथा गोखले की शिकायत की गई थी। इसे पढ़कर मालवीय जी ने ईश्वरचरण से कहा कि 'गोखले कायर और मै बहादुर' यह कहा जा रहा है यह बहुत परिताप और हृदय विदारक बात है। मालवीय जी भूलकर भी किसी के लिए कभी कोई कटु शब्द का प्रयोग नही करते थे।उनका मानना था कि दूसरों का भी अपने साथ – साथ अभ्युदय हो, यही सच्ची राजनीति है। श्रीमती एनी बेसेंट, लोकमान्य तिलक, श्रीनिवास शास्त्री,पंडित मोती लाल नेहरू, डाक्टर तेजबहादुर सप्रू आदि कांग्रेस के नेता राष्ट्र के विभिन्न तत्वों की मूलभूत एकता को सुदृढ़ करने के लिए साम्प्रदायिकता के आधार पर स्थित पृथक निर्वाचन पद्धति को खत्म करके संयुक्त निर्वाचन द्वारा अल्पसंख्यकों के हितों को सुरक्षित करने के पक्ष में थे। मिस्टर मुहम्मद अली जिन्ना की भी यही राय थी, पर मुस्लिम लीग के अधिकांश सदस्य इस बात को मानने के लिए तैयार नही थे। अन्त में कांग्रेस और मुस्लिम लीग की निर्धारिणी समितियों की संयुक्त बैठक में जिन्ना साहब ने कांग्रेस के सदस्यों से इस समय पृथक निर्वाचन को मान लेने की अपील की, और कहा 'जब हम साथ– साथ काम करेंगें, तब विभिन्न संप्रदायों में पारस्परिक विश्वास पुनः स्थापित होगा,और संपूर्ण स्वशासन का मार्ग प्रशस्त कर सकेगें'। उहोंने यह भी आश्वासन दिया कि वे अपने मुसलमान भाइयों से संयुक्त निर्वाचन प्रथा मान लेने को राजी करने का प्रयत्न करेंगें।इस वायदे पर कांग्रेसी नेता पृथक निर्वाचन मान लिये। अन्य कांग्रेसी नेताओं की तरह मालवीय जी भी पृथक निर्वाचन प्रणाली के विरोधी थे। उन्होंने इस प्रश्न पर कांग्रेस–लीग की संयुक्त बैठक में वादविवाद भी किया,पर जब लोकमान्य तिलक आदि राजी हो ये,तब मालवीय जी ने भी,राष्ट्र के व्यापक हितों को ध्यान में रखते हुए इस आशा से मान लिया कि आगे चलकर विचार–विनिमय द्धारा यह दोष दूर किया जा सकेगा।

16 अगस्त सन् 1932 ई0 को प्रधानमंत्री मेकडोल्ड ने अपना साम्प्रदायिक निर्णय घोषित किया। इसमें मुसलमान, दलित, पिछड़ावर्ग, भारतीय ईसाई, सिक्ख, व्यावसायिक और औद्योगिकवर्ग आदि के लिए पृथक् निर्वाचन पद्धति द्धारा पृथक प्रतिनिधित्व की व्यवस्था की गई। यह साम्प्रदायिक निर्णय,जिसे उन्होंने 'अवार्ड'(पंचनिर्णय)के नाम से घोषित किया,लोकतांत्रिक भावना के बजाय सम्प्रदायवादी और पृथकतावादी प्रेरणाओं और प्रवृत्तियों पर आधारित था। वह निःसंदेह लोकतांत्रिक संहति का विनाशक तथा सामाजिक विघटन को बढ़ाने वाला था। मालवीय जी साम्प्रदायिक निर्णय को मानने के लिए तैयार नही थे। वे पृथक निर्वाचन पद्धति के स्थान पर संयुक्त निर्वाचन पद्धति लागू करने के पक्ष में थे। उनका कहना था कि यह निर्णय तो हमें विभाजित करने और सदा

परतंत्रता में बनाये रखने के लिए तैयार किया गया है और इस लिए हम सब भारतीयों को मिलकर उसकी निन्दा करनी चाहिए। मालवीय जी साम्प्रदायिक निर्णय के विरोध में बंगाल,बिहार,उत्तर प्रदेश और पंजाब में बीमारी की हालत में दौरा किया और अपने भाषणों में प्रधानमंत्री के साम्प्रदायिक निर्णय की कड़ी आलोचना करते हुए पृथक निर्वाचन पद्धति की बुराइयों की ओर ध्यान आकृष्ट किया और कहा कि स्वराज्य जनता द्धारा शासन है, वह संप्रदाय द्धारा शासन नही है।(लाल,1978पृ0535) कांग्रेस भी पृथक निर्वाचन का विरोध कर रही थी उसका मानना था कि इससे साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिलेगा और ऐसा लगेगा कि इनके हित,बाकी भारतीयों के हितों से अलग है। अंग्रेजों कि तो नीति ही थी कि भारतीय जनता में फूट डालो, जिससे आम राष्ट्रीय चेतना विकसित न हो सके। लेकिन 1916 ई0 में मुस्लिम लीग के साथ एक समझौते में कांग्रेस ने मुसलमानो के लिए पृथक निर्वाचनमण्डल की बात मान ली थी। इसलिए वह अल्पसंख्यकों की सहमति के बिना इसमें किसी तरह के परिवर्तन के पक्ष में नही है,लेकिन दलित वर्ग को शेष हिन्दू समाज से अलग करने के प्रयास का लगभग सभी राष्ट्रवादी नेताओं ने विरोध किया। गांधी जी उस समय यरवदा जेल में थे यह खबर मिलते ही उन्होंने इसका कड़ा विरोध किया। इसके विरोध में वे 20 सितम्बर 1932 ई0 से आमरण अनसन पर बैठ गये। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गांधी जी को एक संदेश भेजकर कहा की एकता और उसकी सामाजिक अखण्डता के लिए यह उत्कृष्ट बलिदान है। हमारे व्यथित हृदय आपकी इस तपस्या का आदर और प्रेम के साथ अनुकरण करेंगे। विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं के नेता जिसमें मदन मोहन मालवीय, एम.सी रजा और बी0 आर0 अम्बेडकर जी भी शामिल थे,सक्रिय हो गए। मालवीय जी के अथक प्रयास से एक समझौता हुआ, जिसे पूना समझाौता (पूना पैक्ट) के नाम से जाना जाता है। इस समझौते के तहत दलित वर्गो के लिए पृथक, निर्वाचन मंडल समाप्त कर दिया गया।

इस प्रकार हम देखते है कि महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी का संपूर्ण जीवन लोगों की भलाई,सच्ची देशभक्ति एवं राष्ट्र की उन्नति में व्यतीत हुआ। देश की एक पुकार पर उन्होंने अपनी वकालत छोड़ दी। शिक्षा जो प्रत्येक धर्म, चरित्र और आचरण के सुधार पर बल देता है, को आधार मानते हुए महामना ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय जैसे महान संस्थान की स्थापना की। जो लोगों के दिलोदिमाक से जातिवाद, क्षेत्रवाद,संप्रदायवाद, भाषावाद आदि संकीर्ण विचारधाराओं को निकालकर उत्तरोत्तर विकास के पथ पर अग्रसर किया तथा यह महान संस्थान मालवीय जी की याद में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। महामना के व्यक्तित्व पर समग्र दृष्टि डाली जाय तो एक महान अनुभूति होती है तथा यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि तात्कालिक राष्ट्रवादियों की कतार में महामना प्रथम पंक्ति में खड़े दिखायी पड़ते है। मालवीय जी के विचार आज भी प्रासांगिक और उपयोगी है,क्योंकि महामना के उच्च विचार सार्थकता का रूप तो अवश्य ले चुके है,परन्तु वर्तमान और भावी भारत को सदैव ऐसे महापुरूषों की आवश्कता है,जो चरित्र निर्माण की नीव से सुदृढ़ और सुन्दर राष्ट्र – निर्माण का भवन तैयार कर सके।

सन्दर्भ

मालवीय,(1962) *पं. पद्याकान्त, मालवीय जी के लेख*, दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,

तिवारी, उमेश दत्त, (1988)*भारत भूषण महामना पं. मदन मोहन मालवीय,* पब्लिकेशन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,

पाठक, समीर कुमार,(2013) *मदन मोहन मालवीय और हिन्दी नवजागरण,* दिल्ली, यश पब्लिकेशन

चतुर्वेदी, सीताराम (2001) *महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी का जीवन चरित,* वाराणसी, प्रेस, पब्लिकेशन एण्ड पब्लिसिटी सेल काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,

चन्द्र, प्रो0 बिपिन (2010) *भारत का स्वतंत्रता संघर्ष,* हिन्दी माध्यम कार्यान्वन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय,

लाल, प्रो0 मुकुट बिहारी (1978) *महामना मदन मोहन मालवीयः युग एवं नेतृत्व,* वाराणसी, मालवीय अध्ययन संस्थान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,